अक्रम यूथ

फरवरी 2022 हिन्दी

दादा भगवान परिवार

लाइफ का
द एन्ड

अनुक्रमणिका

04 आप क्यों चले गए?

06 ज्ञानी की वैज्ञानिक दृष्टि से

07 यमराज या नियमराज

08 मृत्यु का कारण!

10 मृत्यु के समय क्या होता है?

12 कर्मों की गति न्यारी

14 अगले जन्म का फोटो

15 एक-एक सेकन्ड भी कितना महत्वपूर्ण है!

16 स्वजन की मृत्यु के समय क्या करें?

18 समाधि मरण

19 ज्ञानी आश्चर्य की प्रतिमा

20 महात्माओं के अनुभव

21 मृत्यु का भय दूर होगा?

23 #कविता

फरवरी 2022

वर्ष : 9, अंक : 10

अखंड क्रमांक : 106

संपर्क सूत्र :
ज्ञानी की छाया में,
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद-कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला : गांधीनगर-382421, गुजरात
फोन : (079) 39830100

email: akramyouth@dadabhagwan.org
website: youth.dadabhagwan.org
store.dadabhagwan.org/akram-youth

संपादक : डिम्पल मेहता

Printer & Published by
Dimplebhai Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421.
Taluka & Dist - Gandhinagar

Owned by : Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421.
Taluka & Dist - Gandhinagar

Published at : Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421.
Taluka & Dist - Gndhinagar

Printed at : Amba Multiprint
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar – 382025. Gujarat.
Total 24 Pages with Cover page

Subscription

Yearly Subscription
India :200 Rupees
USA: 15 Dollars
UK: 12 Pounds
5 Years Subscription
India : 800 Rupees
USA: 60 Dollars
UK: 50 Pounds
In India, D.D. / M.O. should be drawn in favour of "Mahavideh Foundation" payable at Ahmedabad.

© 2022, Dada Bhagwan Foundation.
All Rights Reserved

प्यारे मित्रों,

जन्म और मृत्यु का सिलसिला अनिवार्य है और यह किसी के हाथ में नहीं है। जिसका जन्म होता है उसकी मृत्यु अवश्य होती है। यह एक ऐसा सत्य है जिसका सामना हर व्यक्ति को अपने जीवन में करना ही पड़ता है। दूसरी ओर, परिजनों की मृत्यु को स्वीकारना बहुत ही दुःखदायी होता है। मृत्यु के बारे में अलग-अलग तरह की मान्यताएँ प्रचलित हैं लेकिन मृत्यु की वास्तविकता के बारे में कोई बता नहीं पाया है। क्योंकि जिसकी मृत्यु हो जाती है वह अपना अनुभव बता नहीं सकता और जिसका जन्म होता है वह अपनी पिछली अवस्था स्थिति के बारे में जानता नहीं है। इस तरह मृत्यु से संबंधित प्रश्नों ने अनंत काल से लोगों के मन में भय और भय का जाल फैला रखा है। विज्ञान की इतनी प्रगती होने के बावजूद भी इस बारे में कोई स्पष्टीकरण नहीं हो पाया है।

मृत्यु जैसे गंभीर और संवेदनशील विषय पर आधारित अक्रम यूथ के इस अंक में जीवन की सबसे कठिन और अटल अवस्था के संबंध में अनजाने रहस्यों को उजागर करने का प्रयास किया गया है। आशा है कि ज्ञानी पुरुष दादाश्री द्वारा बताई गई यह हकीकत हमें इस कड़वी वास्तविकता को स्वीकार करने के लिए योग्य समझ प्रदान करेगी। साथ ही साथ, जीवन में कभी ऐसे संजोगों का सामना करना पड़े तो प्राप्त समझ द्वारा स्थिरतापूर्वक, शोक-दुःख में रहे बिना दूसरों को भी इस दुःख में से बाहर निकाल सकने में समर्थ बनकर मदद रूप हो पाएँगे...

- डिम्पल भाई मेहता

आप क्यों चले गए?

हेमा बेन पिछले तीन दिनों से वेन्टिलेटर पर थे। बाहर उनका बेटा जय अपने पापा रमेश भाई के पास ही में सहमा हुआ बैठा था। रमेश भाई के मुख पर चिंता साफ झलक रही थी। वे पास में बैठे जय की पीठ को सहला रहे थे। पैसों और प्रतिष्ठा का रुआब जो रोज़ रमेश भाई की चाल में दिखाई पड़ता था वह आज न जाने कहाँ गायब हो गया था। घर में और ऑफिस में सबके ऊपर ऑर्डर चलाने वाले रमेश भाई आज एक लाचार इंसान दिख रहे थे। वे आँखें बंद करके निरंतर प्रार्थना किए जा रहे थे। जय एकटक अपने पापा की ओर देख रहा था।

तभी अचानक डॉक्टर्स तेज़ चाल से आने-जाने लगे। रमेश भाई खड़े हो गए। वे कुछ पूछने जा रहे थे पर डॉक्टरों का अभी पेशेन्ट पर ध्यान देना ज्यादा ज़रूरी था। उन्होंने रमेश भाई को वेटिंग एरिया में बैठने को कहा और अपनी ड्यूटी में लग गए।

कुछ दिनों पहले हेमा बेन को बुखार आया, वे डॉक्टर के पास गए और कुछ टेस्ट कराए। न्यूमोनिया डिटेक्ट हुआ। मेडिसिन से फर्क नहीं पड़ा। तबीयत बिगड़ती गई। साँस लेने में तकलीफ होने लगी और उन्हें हॉस्पिटल में एडमिट किया गया। उसके बाद भी उनकी हालत में कोई सुधार नहीं हुआ। अभी उनकी साँसें फूल रही थीं। ऑक्सीजन का मीटर 40 और 50 के बीच में झूल रहा था.... तुरंत ही उन्हें वेन्टिलेटर पर रखा गया।

"रमेश भाई" कहते हुए डॉक्टर मेहता रमेश भाई के पास आए। उनको देखकर रमेश भाई की आँखों में ढ़ेर सारे सवाल खड़े हो गए। पर वे कुछ बोल नहीं पाए। बस एकटक उन्हें देखते रहे।

डॉक्टर ने उनके कंधे पर हाथ रखते हुए धीमी और स्थिर आवाज़ में कहा "हेमा बेन के पास अब अधिक समय नहीं है।"

यह सुनते ही मानों रमेश भाई के सिर पर दुःखों का पहाड़ टूट पड़ा। वे तुरंत हेमा बेन के रूम की तरफ दौड़े। जय भी उनके पीछे भागा।

हेमा बेन एकदम स्थिर सोई हुई थीं। नाक में ऑक्सीजन का पंप लग हुआ था। दोनों हाथों में आइ.वी. लगी हुई थी। उनमें से इन्जेक्शन दिया जा रहा था। पास में रखे मॉनिटर की स्क्रीन ऑन थी। उसमें उनके हार्टबीट्स दिखाई दे रहे थे। हार्टबीट्स के वेव्स स्लो होते जा रहे थे।

हेमा बेन कोई मूवमेन्ट नहीं कर पा रही थीं। सिर्फ उनकी आँखें इन दोनों को देख रही थीं। वे कुछ कहना चाह रही थीं पर बोल नहीं पा रही थीं और रमेश भाई उदास नज़रों से उन्हें देख रहे थे। जय यह सीन देखकर स्तब्ध हो गया था। उसे थोड़े दिनों पहले का एक प्रसंग याद आ गया...

"जय... पहले खाना खा लो बेटा, फिर पढ़ाई करना। मुझे अभी और भी काम निपटाने हैं, तुम खाना खा लो तो मैं फ्री हो जाऊँ।"

"ओह प्लीज मम्मी, कितनी बार बोलोगी! तुम बोलना बंद करो। कहा ना, आ रहा हूँ।"

"बिल्कुल बोलना बंद कर दूँगी ना, तब मुझे याद करोगे!"

तभी हेमा बेन को साँस लेने में तकलीफ होने लगी। उनकी आवाज़ सुनकर जय वर्तमान में लौटा। उनकी हार्टबीट्स स्लो होती जा रही थी। रमेश भाई ने हेमा बेन का हाथ अपने हाथ में लिया। और तभी हेमा बेन ने अंतिम साँस ली!

उनका हाथ रमेश भाई के हाथ में ढ़ीला पड़ गया और उनकी आँखें खुली रह गईं। रमेश भाई की आँखों में से लगातार आँसू बह रहे थे।

डॉक्टर ने आकर हेमा बेन की आँखें बंद कर दी।

यह देखकर जय ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा, "नहीं मम्मी, आप मुझे ऐसे छोड़कर नहीं जा सकतीं। मैं कभी भी आप पर गुस्सा नहीं करुँगा। प्लीज... आप वापस आ जाओ।"

जय ज़ोर-ज़ोर से रो रहा था और रमेश भाई भी धीमी आवाज़ में रो रहे थे। उन्होंने अपना हाथ जय के सिर पर रखा।

"पापा, मम्मी से कहो ना कि एक बार वापस आ जाएँ, प्लीज।"

रमेश भाई चुप थे। क्या कहते?

"क्यों पापा, क्यों... क्यों सभी को एक दिन इस तरह जाना पड़ता है? यह सब क्या है? क्या है?" कहते हुए वह अनसुलझे प्रश्नों के साथ हेमा बेन के पैरों पर सिर रखकर रो पड़ा, "प्लीज मम्मी, आप तो बताओ कि आप क्यों चले गए?"

जय का बेस्ट फ्रेन्ड रवि तभी दौड़ते हुए हॉस्पिटल पहुँचा। जय के चिखते-चिलाते सवालों और उसका दुःख रवि से देखा नहीं जा रहा था। दिन बीतते गए लेकिन जय इस सवालों के जवाब ढूँढने की स्थिती में नहीं था। इसलिए रवि ने गुगल पर सर्च करना शुरू किया ताकि जय के सवालों के जवाब मिल पाए।

ज्ञानी की वैज्ञानिक दृष्टि से

प्रश्नकर्ता : मृत्यु क्या है?

दादाश्री : मृत्यु तो, ऐसा है न, यह कमीज़ सिलवाई अर्थात् कमीज़ का जन्म हुआ न, और जन्म हुआ इसलिए मृत्यु हुए बगैर रहेगी ही नहीं! किसी भी वस्तु का जन्म होता है तो उसकी मृत्यु अवश्य होती है। और आत्मा अजन्म-अमर है, उसकी मृत्यु ही नहीं होती। मतलब जितनी चीज़ें उत्पन्न होती हैं, उनकी मृत्यु अवश्य होती है। और मृत्यु है तो जन्म होगा। जन्म के साथ मृत्यु जोइन्ट हुई है। यदि जन्म है तो मृत्यु अवश्य है!

प्रश्नकर्ता : मृत्यु किसलिए है?

दादाश्री : मृत्यु तो, ऐसा है न, इस देह का जन्म होना, वह एक संयोग है और उसका वियोग हुए बगैर रहेगा ही नहीं न! संयोग हमेशा वियोगी स्वभाव के ही होते हैं। जब हम स्कूल में पढ़ने गए थे, तब शुरुआत की थी या नहीं? बिगिनिंग? फिर एन्ड आया या नहीं आया? हर एक चीज़ बिगिनिंग और एन्ड वाली ही होती है। यहाँ पर इन सभी चीज़ों का बिगिनिंग और एन्ड होता है। नहीं समझ में आया तुझे?

प्रश्नकर्ता : समझ में आया न!

दादाश्री : ये सभी चीज़ें बिगिनिंग-एन्ड वाली, परंतु बिगिनिंग और एन्ड को जो जानता है, वह जानने वाला कौन है?

सभी चीज़ें बिगिनिंग व एन्ड वाली हैं, वे टेम्परेरी (अस्थायी) चीज़े हैं। जिसका बिगिनिंग होता है उसका एन्ड होता है। बिगिनिंग हो उसका एन्ड होता ही है, अवश्य। वे सभी टेम्परेरी चीज़ें हैं, मगर टेम्पररी को जानने वाला कौन है? तू परमानेन्ट है, क्योंकि तू इन चीज़ों को टेम्परेरी कहता है, इसलिए तू परमानेन्ट है। यदि सभी चीज़ें टेम्परेरी होतीं तो फिर टेम्परेरी कहने की ज़रूरत ही नहीं थी। टेम्परेरी सापेक्ष शब्द है। परमानेन्ट है तो टेम्परेरी है।

यमराज या नियमराज?

रवि : यदि हर एक लाईफ का 'द एन्ड' निश्चित है तो फिर मेरी दादी कहती हैं कि 'यमराज लेने आता है तब मृत्यु होती है।' मैंने भी स्टोरी में और मुवी में ऐसी बातें सुनी हैं। काला हूड पहने हुए कोई लेने आता है तो क्या ये सब सच है?

कुछ लोगों की मान्यता के अनुसार अगर रात को कुत्ता रोता है तो कहते हैं कि, 'यमराज लेने आए हैं। यमदूत मार-मार कर यमलोक ले जाते हैं, बहुत दुःख देते हैं। बड़े दाँत, बड़ी आँखों वाले यमराज भैंसें की सवारी पर आते हैं।' ऐसी अनेक प्रकार की बातें हमें बचपन से ही डराती रहती हैं। लेकिन प्रकट ज्ञानी दादाश्री ने खुलासा किया है कि यमराज नाम का कोई है ही नहीं। हाँ, नियमराज है। पैदा होना नियम है, जीवन जीना भी नियम के आधार से है और मृत्यु भी नियम के आधार से ही आती है। ऐसी सच्ची समझ मिले तो क्या कोई भय या डर रहेगा?

यमराज नाम का कोई नहीं है, वह तो नियमराज है। नियमराज सब चलाता है। नियमराज ही जीवित रखता है और नियमराज ही मारता है। -दादाश्री

मृत्यु का कारण!

रवि : अगर यमराज जैसा कोई नहीं है तो मृत्यु कैसे होती है? जय की मदर की उम्र भी ज्यादा नहीं थी। उनके पड़ोस में एक अस्सी वर्ष की दादी अभी भी जीवित हैं। तो वास्तव में मृत्यु का कारण क्या है? आयुष्य का आधार क्या है?

प्रश्नकर्ता : तो मृत्यु क्यों आती है?

दादाश्री : वह तो ऐसा है, जब जन्म होता है, तब मन-वचन-काया की तीन बैटरियाँ होती हैं, जो गर्भ में से इफेक्ट (परिणाम) देना शुरू करती हैं। जब वे इफेक्ट खत्म हो जाते हैं, 'बैटरियों' से भी हिसाब खत्म हो जाता है, तब तक वह बैटरियाँ रहती हैं और फिर जब वे खत्म हो जाती हैं तो उसे मृत्यु कहते हैं।

लेकिन तब फिर अगले जन्म के लिए भीतर बैटरियाँ चार्ज हो गई होती हैं। अगले जन्म के लिए भीतर नई बैटरियाँ चार्ज होती ही रहती हैं और पुरानी 'बैटरियाँ' 'डिस्चार्ज' होती जाती हैं। ऐसे 'चार्ज-डिस्चार्ज' होता ही रहता है क्योंकि उसे 'रोंग बिलीफ' है इसलिए कॉज़ेज़ उत्पन्न होते हैं। जब तक 'रोंग बिलीफ' है तब तक राग-द्वेष और कॉज़ेज़ उत्पन्न होते हैं और जब 'रोंग बिलीफ' बदल जाए और 'राइट बिलीफ' बैठ जाए तो फिर राग-द्वेष और कॉज़ेज़ उत्पन्न नहीं होंगे।

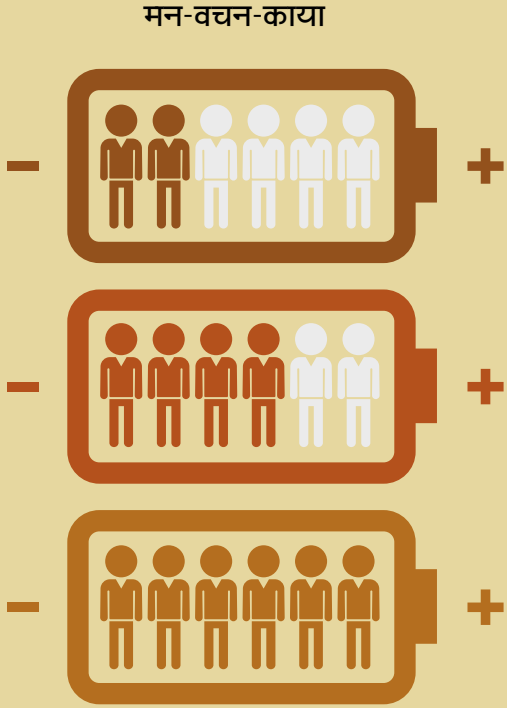

श्वासोच्छवास के आधार पर आयुष्यः

नियम ऐसा है कि मनुष्य का आयुष्य श्वासोच्छवास के आधार पर निर्भर करता है। एक सामान्य मनुष्य का आयुष्य सौ साल का होता है। नॉर्मल मनुष्य के श्वासोच्छवास जितने होते हैं उसके आधार पर गणना करके आयुष्य निर्धारित किया जाता है। अब यदि श्वासोच्छवास का उपयोग कम होता है तो आयुष्य एक सौ चालीस साल भी हो सकता है और यदि अधिक उपयोग होता है तो तीस वर्ष में भी मृत्यु हो सकती है।

अहंकार के हस्ताक्षर के बिना मृत्यु नहीं होती है :

कोई भी इस दुनिया को छोड़कर जाना नहीं चाहता। लेकिन कुदरत का नियम ऐसा है कि किसी भी इंसान की मृत्यु उसके हस्ताक्षर के बिना नहीं होती।

यह हस्ताक्षर कैसे हो जाता है?

उदाहरण के तौर पर, कोई व्यक्ति अस्पताल में एडमीट हो या किसी का एक्सिडेन्ट हो गया हो उस समय देह में भयंकर वेदना होती है और दर्द सहन नहीं होता है, तो वह दुःख के मारे बोल देता है कि, **"हे भगवान! अब यह देह छूट जाए तो अच्छा!"** इसे हस्ताक्षर हो गए कहा जाएगा।

जब तक अंहकार के हस्ताक्षर नहीं होते तब तक मृत्यु नहीं आ सकती।

मृत्यु के समय क्या होता है?

रवि : ओह! तो अहंकार के हस्ताक्षर हो जाने के बाद मृत्यु के समय क्या होता है?

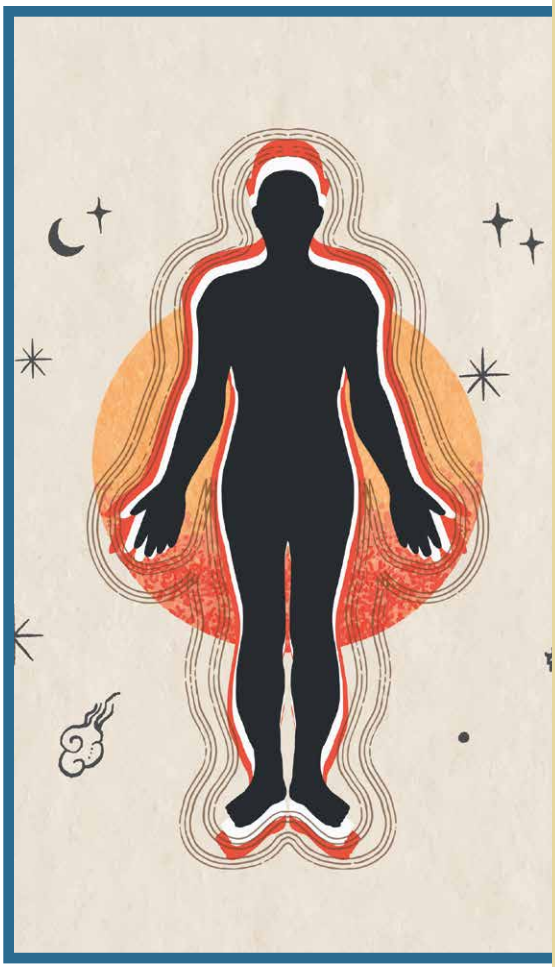

आत्मा, कारण शरीर और तेजस शरीर साथ में निकलते हैं।

जैसे साँप उसके एक बिल में से बाहर निकल रहा होता है और दूसरे बिल में भीतर प्रवेश कर रहा होता है ऐसे ही एक ओर आत्मा इस देह में से निकल रहा होता है और दूसरी ओर योनि में प्रवेश कर रहा होता है।

अहमदाबाद से देह छूटने वाला हो और वड़ोदरा में जन्म होने वाला हो, तो आत्मा एक देह छोड़े बिना, जहाँ जाना हो उतना लंबा खिंचा जाता है। माता का रज और पिता का वीर्य, इन दोनों का संयोग होने का टाइमिंग हो, उस समय योनि में प्रवेश करता है और जैसे ही एक देह छूटता है वैसे ही दूसरे देह में प्रवेश कर चुका होता है।

देह छोड़कर आत्मा अकेला नहीं जाता लेकिन कारण शरीर, तेजस शरीर (इलेक्ट्रिकल बॉडी) और आत्मा, तीनों साथ में जाते हैं।

- **तेजस शरीर (इलेक्ट्रिकल बॉडी)** के कारण सभी शारीरिक क्रियाएँ होती हैं जैसे कि खाना-पीना, भोजन का पाचन, रक्त का संचालन, आँखों से देखना आदि।
- **कारण शरीर (कॉज़ल बॉडी)** तो पूरे शरीर में भरा होता है, वह परमाणु के रूप में होता है। उन परमाणुओं में से फिर कार्य देह (इफेक्टिव बॉडी) का गठन होता है, जैसे कि बरगद के पेड़ के बीज में से पूरा पेड़ विकसित होता है।

परम पूज्य दादाश्री,
पूज्य नीरू माँ और
पूज्य दीपक भाई के

- सत्संग
- पुस्तकें
- फोटो
- ऑडियो
- वीडियो

इत्यादी...

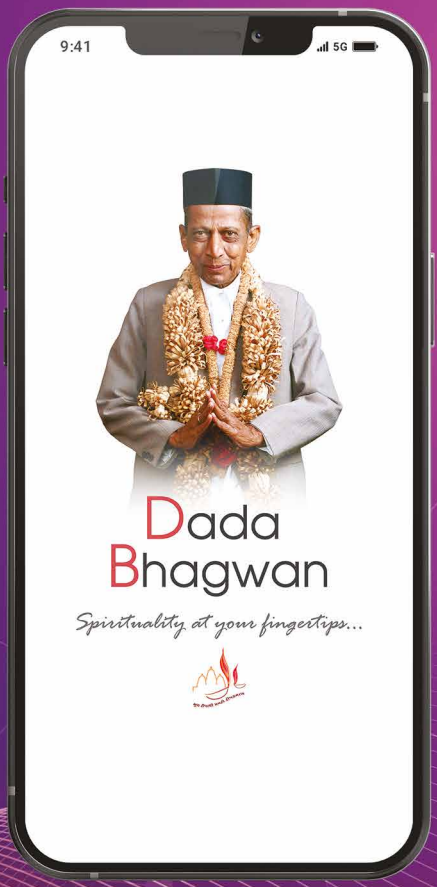

GET IT ON Google Play

Download on the App Store

For Free Download
Scan Here

satsang.dadabhagwan.org

कर्मों की गति न्यारी

गोशाला और महावीर भगवान

"मैं सर्वज्ञ तीर्थंकर हूँ। महावीर स्वामी खुद़ को तीर्थंकर कहते हैं पर वे एक ढोंगी हैं!"

महावीर भगवान के शिष्य गोशाला ने, जिसने महावीर भगवान से ज्ञान प्राप्त किया था उसने ही इस तरह की बातें फैलाना शुरू किया। यह बात महावीर प्रभु के परम शिष्य गौतम स्वामी के कानों में भी पड़ी और उन्होंने महावीर प्रभु से पूछा कि, "क्या यह बात सच है? गोशाला खुद़ को सर्वज्ञ कहता है?"

वीतराग भगवान ने केवल इतना ही कहा, "यह बात सच नहीं है!"

यह सुनकर गोशाला क्रोध से भड़क उठा। अपनी हकीकत सबके सामने आने के डर से वह बोला "अपने आपको तीर्थंकर कहलवाते हो! मैं आपको वाद-विवाद में हरा दूँगा ताकि लोगों को पता चल सके कि सच्चा सर्वज्ञ कौन है?" और फिर वहाँ से चला गया।

महावीर भगवान ने अपने शिष्यों से कह रखा था कि "गोशाला यहाँ आएगा और उल्टी-सीधी बातें भी करेगा। वह चाहे तिरस्कार करे, अपमान करे, तुम सब मौन रहना।"

गौतम स्वामी ने प्रभु से पूछा कि "गोशाला के द्वेष का कारण क्या है?" तब महावीर भगवान ने उनसे कहा कि "यह पूर्व जन्म का हिसाब है" और सारी बात बताने लगे। महावीर भगवान के २७ भव पहले भी भगवान महावीर और गोशाला गुरु-शिष्य थे। एक बार महावीर ने अहिंसा पर उपदेश दिया। तब गोशाला को लगा कि ऐसी अहिंसा का पालन तो कैसे हो सकता है? इसके बजाय मैं कोई दूसरा मार्ग खोज़ लूँ। और इस तरह गोशाला गुरु से अलग हो गया। उसी भव में बिजली गिरने से गोशाला की मृत्यु हो गई और मृत्यु के समय गुरु के प्रति अत्यंत द्वेष होने के कारण उसका जीव अधोगति में गया। अधोगति में अनेक भव गुजारने के बाद फिर से इस भव में वह महावीर भगवान का शिष्य बनकर वापस आया। पूर्वभव के ऋणानुबंध के कारण वह उनके साथ-साथ ही रहा लेकिन पूर्वभव के द्वेष का हिसाब चालू ही रहा।

अगले दिन गोशाला भगवान महावीर के पास

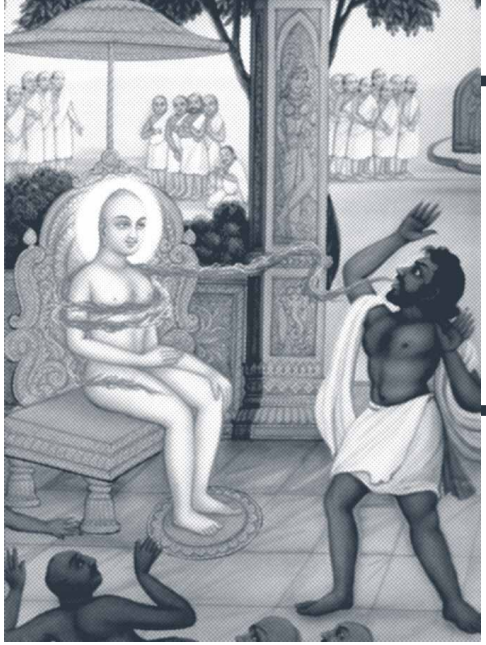

भगवान ने गौशाला से कहा, "मुझे कुछ नहीं होगा। अभी भी जीवों का कल्याण करने के लिए मेरा चौदह वर्ष का आयुष्य शेष है। पर जो तेजोलेश्या तुमने मेरे ऊपर फेंकी, वह तुम्हारे शरीर में ही प्रवेश कर गई है। अब सात दिनों में तुम्हारी मृत्यु हो जाएगी।"

आकर उल्टा-सीधा बोलने लगा और कहने लगा कि, "तेजोलेश्या फेंककर मैं आपको जला डालूँगा।" प्रभु शांत चित्त से सब कुछ सुन रहे थे। लेकिन उनके दो शिष्य जिन्हें भगवान पर अत्यंत अनुराग था उनसे यह सहन नहीं हुआ। सर्वानुभूति और सुनक्षत्र, इन दोनों मुनियों ने गोशाला को समझाने का प्रयत्न किया, "हे गोशाला! तुमने प्रभु को गुरु माना था। उन्होंने तुम्हें ज्ञान दिया है और उन्हीं गुरु की तुम अवहेलना कर रहे हो?! क्या यह तुम्हें शोभा देता है?"

क्रोध में आकर गोशाला ने मुनियों पर तेजोलेश्या फेंकी और दोनों को जला डाला। और फिर महावीर भगवान को जलाने के लिए उनके ऊपर तेजोलेश्या फेंकी। तेजोलेश्या प्रभु को जलाने में असमर्थ रही। प्रभु के शरीर की प्रदक्षिणा करके तेजोलेश्या घूमकर गोशाला के शरीर में ही प्रवेश कर गई। तेजोलेश्या के प्रभाव से गोशाला को शरीर में भयंकर जलन होने लगी।

यह सुनकर गौशाला एकदम घबरा गया। मृत्यु के भय से उसने कहा कि "मैं तीर्थंकर नहीं हूँ।" और अपने शिष्यों के सामने जाकर आलोचना की कि "मुझसे भूल हुई है। भगवान महावीर ही तीर्थंकर हैं, तुम सब उनके पास जाना।" और सात दिनों के बाद गौशाला की मृत्यु हो गई।

तब फिर से गौतम स्वामी ने प्रभु से पूछा कि "गौशाला कौन सी गति में जाएगा?"

भगवान ने कहा "वह देवगति में जाएगा।"

यह सुनकर गौतम स्वामी को आश्चर्य हुआ कि उस भव में गुरु से द्वेष करने के कारण उसकी अधोगति हुई थी। और इस बार इतना बड़ा गुनाह करने के बाद भी गौशाला देवगति में जाएगा, वह कैसे?

भगवान ने कहा, 'मरते समय उसने बहुत पछतावा किया था और अपने शिष्यों के सामने आलोचना की थी, जिसका फल उसे देवगति मिलेगी। लेकिन उसके बाकी के कर्म भोगने शेष रहने के कारण वह कई जन्मों तक भटकेगा।'

कर्मों की गति न्यारी है। हमारा अगला जन्म कौन सी गति में होगा, वह मृत्यु के समय हमारी आंतरिक दशा और ऋणानुबंध के आधार पर तय होता है।

अगले जन्म का फोटो

रवि : अगला जन्म कहाँ होगा, यह कैसे तय होता है?

हमारा 2/3 आयुष्य पूरा होता है तब अगले जन्म का फोटो खींचा जाता है। अर्थात् अगले जन्म में कौन सी गति होगी वह तय हो जाता है।

यह फोटो बदलता रहता है। एक बार मनुष्य का फोटो हो सकता है, तो दूसरी बार देव का हो सकता है और तीसरी बार जानवर का भी हो सकता है। फोटो बदलता ही रहता है। पर सब से अंत में जो फोटो खिंचा गया वह फाइनल होता है। जो मनुष्य अंतिम 1/3 आयुष्य के दौरान धर्मध्यान अथवा तो शुक्लध्यान में होता है वह बहुत ऊँची गति में जाता है।

तो इस गणित के अनुसार... समझो कि अगर आयुष्य 81 साल का है। तो,

पहेली फोटो - 54 वर्ष की आयु में खींचा जाता है।
दूसरा फोटो - 72 वर्ष की आयु में खींचा जाता है।
तीसरी फोटो - 78 वर्ष की आयु में खींचा जाता है।
चौथा फोटो - अस्सी साल और आठ महीनें की आयु में खींचा जाएगा। यानी कि मृत्यु के 120 दिनों पहले।
पाँचवाँ फोटो - मृत्यु के 40 दिनों पहले खींचा जाता है।।
ऐसा करते करते...
अंतिम फोटो - 1 मिनिट पहले... 40 सेकन्ड पहले...7 सेकन्ड पहले...
और फिर अंतिम फोटो खींचा जाता है।

एक-एक सेकन्ड भी कितना महत्वपूर्ण है!

हम नहीं जानते कि हमारा आयुष्य कितना है और कौन सी घड़ी अंतिम घड़ी है! इसलिए अभी से ही जाग्रत क्यों न हो जाएँ? और हमेशा ही फोटो अच्छा आए इसका खास ध्यान रखें! और फिर ऐसा भी नहीं है कि हम पूरी जिंदगी कुछ भी करें और अंत में ऐसा करें कि अच्छा फोटो आए ताकि कोई परेशानी न हो! सचमुच तो हमने पूरे जीवन जो किया होता है मृत्यु के समय उसका सार निकलता है और उसी के आधार पर अगला जन्म निर्धारित होता है।

तो क्यों न अभी से ही चौकन्ना हो जाएँ?

स्वजन की मृत्यु के समय क्या करें?

रवि : मृत्यु के विषय में इतनी सारी नई बातें तो मुझे आज ही जानने को मिली। लेकिन यदि कोई स्वजन की मृत्यु हो जाए तो इसमें से कितना याद आएगा? जय रोज़ अपनी मम्मी को याद करके रोता है। तो उस समय क्या करना चाहिए?

प्रार्थना

किसी करीबी की मृत्यु के बाद यदि हम दुःखी होते हैं तो वे स्पंदन उसे पहुँचते हैं। और मरने वाला व्यक्ति जहाँ होगा वहाँ उसे दुःख होता है। ठीक वैसे ही जैसे कि हमने और मरने वाले व्यक्ति ने एक रस्सी के दोनों छोर पकड़े हों, तो फिर यदि हम रस्सी खींचेंगे तो सामने वाले की को भी खिंचाव महसूस होगा। दुःखी होने के बदले हमें प्रार्थना करनी चाहिए कि "वे जहाँ हों वहाँ उनकी आत्मा को सुख और शांति मिले।" तो ऐसे पॉज़िटिव स्पंदनों से उन्हें शांति मिलेगी।

मृत व्यक्ति के प्रति प्रार्थना!

प्रत्यक्ष दादा भगवान की साक्षी में, प्रत्यक्ष सीमंधर स्वामी की साक्षी में देहदारी (मृत व्यक्ति का नाम) के मन-वचन-काया के योग, भावकर्म, द्रव्यकर्म, नोकर्म से भिन्न ऐसे हे शुद्धात्मा भगवान! आप जहाँ हों वहाँ सुख-शांति पाएँ, मोक्ष पाएँ। आज दिन के अद्यक्षण पर्यंत मुझ से जो भी राग-द्वेष, कषाय हुए हो, उनकी माफ़ी चाहता हूँ। हृदयपूर्वक पछतावा करता हूँ। मुझे माफ कीजिए और फिर से ऐसे दोष कभी भी नहीं हों, ऐसी शक्ति दीजिए।

(इस प्रकार बार-बार प्रार्थना करनी चाहिए। और जब-जब मृत व्यक्ति याद आए, तब-तब यह प्रार्थना करनी चाहिए।)

समाधि मरण

रवि : लेकिन मृत्यु यानि वेदना, दुःख, निराशा, रुदन, यही है ना? क्या इसके सिवाय भी मृत्यु संभव है? ऐसी मृत्यु जिससे जाने वाले को भी दुःख न हो और आस-पास के लोगों को भी?

समाधि मरण अर्थात् देह को पीड़ा होने के बावजूद भी खुद को छुए नहीं और समाधि मरण पाने वाले व्यक्ति के आस-पास के लोगों को भी दुःख का अनुभव न हो। अंतिम क्षणों में आत्मा के सिवाय और कुछ याद ही नहीं रहता है। 'मैं शुद्धात्मा हूँ, मैं शुद्धात्मा हूँ' ऐसा निरंतर रहता है। ऐसा समाधि मरण आत्मा के ज्ञान से ही संभव है। ऐसा ज्ञान जिसके आधार से किसी भी तरह की कठिनाई में खुद को दुःख नहीं लगता है और वह ज्ञान आत्मज्ञानी के पास से ही मिल सकता है।

तो चलो, ऐसे ही आत्मज्ञानी नीरू माँ का अनुभव सुनते हैं कि यह ज्ञान किस तरह स्वजन की मृत्यु के समय मदद करता है।

ज्ञानी आश्चर्य की प्रतिमा

सच्चा ज्ञान वह है जो स्वयं क्रियाकारी हो। आपको कुछ भी करना ना पड़े। वह सीधी आत्मा की ही जागृति है। इसलिए मुझे लगा कि मेरे जीवन का सर्वश्रेष्ठ हेतु यही है कि दादा के माध्यम द्वारा यह ज्ञान दूसरे लोग भी पाएँ।

ज्ञान लेने के छः महीने बाद अचानक ही मेरे फादर का देहविलय हो गया, हार्ट अटैक के कारण। मैं तब दूसरे शहर में थी। इसलिए जब मुझे पता चला कि उनकी मृत्यु हुई है तब सबसे पहले मुझे अंदर से हुआ कि वे आत्मा हैं, आत्मा कभी मरता नहीं उन्होंने पुराना फटा हुआ कोट निकालकर नया कोट पहना है। इसलिए यह उनके लिए अच्छा है, इसमें क्या गलत है? यदि मैं रोती हूँ तो वह रोना मेरे खुद़ के लिए होगा उनके लिए नहीं। मैं स्वस्थ और शांत थी और आत्मा का आनंद पूरे समय एक जैसा ही था, कोई बदलाव नहीं। पहली बार मुझे ऐसा अनुभव हुआ था।

ज्ञान लेने से दो वर्ष पहले मेरी मदर का देहविलय हुआ था। उस समय मैं बहुत दुःखी रहती थी, मैं बहुत वेदना में थी। मदर के जाने के बाद छः महीने बहुत ही खराब रहे। जबकि अब इस बार एक सेकेन्ड के लिए भी मैं दुःखी नहीं हुई। मैं संपूर्ण रूप से आनंद में थी इसलिए दुःख मुझे छू नहीं पाया। फिर एक के बाद एक मेडिकल की डिग्रीयाँ मेरे पास आती गईं। तब भी मुझे अदंर कुछ फर्क नहीं पड़ा, अंदर कोई बदलाव नहीं । अदंर का आनंद एक जैसा ही रहा। इसलिए मुझे नोटिस हुआ कि यह ज्ञान स्वयं ही कार्य कर रहा है। मैंने कोई प्रयत्न नहीं किया है, कुछ भी नहीं किया है।

सच्चा ज्ञान वह है जो स्वयं क्रियाकारी हो। आपको कुछ भी करना ना पड़े। वह सीधी आत्मा की ही जागृति है। इसलिए मुझे लगा कि मेरे जीवन का सर्वश्रेष्ठ हेतु यही है कि दादा के माध्यम द्वारा यह ज्ञान दूसरे लोग भी पाएँ। क्योंकि दादा बहुत ही अलग प्रकार के व्यक्ति थे। वे किसी से यह नहीं कहते थे कि मेरे पास ऐसा ज्ञान है, इसलिए आओ और ज्ञान ले जाओ। जब मैं उनसे मिली तब मेरी उम्र 23 वर्ष की थी और दादा की उम्र 60 वर्ष से अधिक थी। मुझे ऐसा लगता कि वे चले जाएँगे, उनका देहविलय हो जाएगा और दादा के बारे में किसी को पता भी नहीं चलेगा! इसलिए यह ज्ञान सबको मिलना चाहिए क्योंकि सबको इस ज्ञान की ज़रूरत है।

महात्माओं के अनुभव

रवि : लेकिन नीरू माँ तो आत्मज्ञानी थे। क्या सामान्य व्यक्तियों के लिए ऐसा अनुभव संभव है?

दादाजी के समाधि मरण के समय...

किसी करीबी की मृत्यु के समय की मेरी कल्पना और वास्तव में यह घटना के बीच में ज़मीन-आसमान का अंतर था। जिस समय मेरे दादा (Grandfather) ने देह त्याग किया, उस समय मुझे एक अलग ही शांति का अनुभव हुआ। मेरा उनके साथ बहुत अटैचमेन्ट था, फिर भी अंदर बिल्कुल दुःख नहीं हुआ। ज्ञान लिया था, इसलिए बाहर सब क्रियाएँ चल रही थीं लेकिन अंदर जुदापन रहता था। दादा की मृत्यु के समय मेरे ऐसे पॉज़िटिव अप्रोच का असर फैमिली के दूसरे लोगों पर भी हुआ। जो अपसेट होकर रोने लगे थे, उन्हें समता में रहने में मदद मिली।

- राधिका पटेल, यु.के (24 वर्ष)

पिता की मृत्यु के समय...

ऐसा लगता कि दादा हमेशा साथ में ही हैं। अगर कभी व्याकुल हो जाती तो तुरंत ऐसा लगता जैसे कि भीतर से दादा कह रहे हों 'मैं हूँ न तुम्हारे साथ!' फिर डर निकल गया। कोई सांत्वना देने के लिए फोन करता तो ऐसा नहीं लगता कि परिस्थिति खराब है। हमेशा ऐसा ही लगता की जैसे दादा साथ में ही हैं। हमारा क्या होगा ऐसा भोगवटा नहीं हुआ और बिल्कुल भी रोना नहीं आया। अंतिम समय पर भी अद्‌भुत शांति रही। अंदर शून्य! जैसे कुछ भी नहीं हुआ हो। ऐसा ही लगता था कि दादा सामने ही खड़े हैं।

- करिश्मा शाह (18 वर्ष)

मृत्यु का भय दूर होगा?

रवि : लाइफ और डेथ की रियालिटी आज मुझे समझ में आई। लेकिन अगर प्रैक्टिकली बात करें तो यदि आज मुझे कोई कहे कि रवि, कल तुम्हारी लाइफ का अंतिम दिन होगा, तो इस विचार से ही मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं। मन में कई तरह के विचारों का बवंडर उठने लगते हैं।

- **फैमिली और फ्रेन्ड्स को छोड़कर जाना पड़ेगा?**
- **मैं मर जाऊँगा तो मेरी लाइफ के गोल्स का क्या होगा?**
- **मृत्यु के बाद मेरा क्या होगा?**
- **मृत्यु के समय हम अकेले ही होते हैं न?**

इन सभी भय में से कैसे छूटा जा सकता है?

ज्ञानी विद् यूथ

प्रश्नकर्ता : मैं कभी-कभी मृत्यु के विचारों से बहुत डर जाता हूँ। मैं जितना अधिक इसके बारे में सोचता हूँ, उतना ही ज्यादा उलझ जाता हूँ, मेरे मन में बहुत सारे प्रश्न उठते हैं। आप मेरी मदद कीजिए जिससे मैं जीवन के बारे में और ज्यादा समझ सकूँ।

पूज्यश्री : क्या आप रोज़ नहाते हो?

प्रश्नकर्ता : हाँ, रोज़ नहाता हूँ।

पूज्यश्री : हाँ, इसका मतलब है कि आप मैले कपड़े बदलते हो और धुले कपड़े पहनते हो। यानी कि आप परमानेन्ट हो और कपड़े रोज़ सुबह बदल दिए जाते हैं। यदि कभी शाम को किसी शादी के रिसेप्शन में या कहीं और जाना हो तो हम फिर से कपड़े बदलते हैं। मतलब देह टेम्परेरी है और आत्मा परमानेन्ट है। देह टेम्परेरी है कि नहीं?

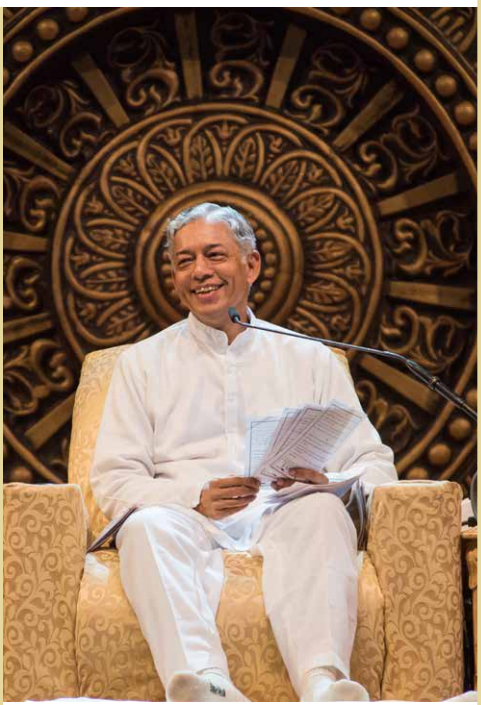

प्रश्नकर्ता : हाँ और मैं यह भी सोचता हूँ कि जन्म से पहले मैं कहाँ था?

पूज्यश्री : यह महत्वपूर्ण नहीं है। हमें कहाँ जाना है वह बहुत महत्वपूर्ण है। हमें यह अनुभव करना है कि हम शाश्वत है और यह महत्वपूर्ण है। यानी ये सब अवस्थाएँ हैं, वो बदलती रहती हैं। हम परमानेन्ट हैं, ज्ञाता-दृष्टा हैं। एक बार आपको समझ में आ जाएगा कि सब रिलेटिव टेम्परेरी एडजस्टमेन्ट है, मैं रियल हूँ और शाश्वत हूँ। यानी आप शुद्धात्मा हो, आप अविनाशी हो, आप शाश्वत हो, यह समझना है।

अहंकार को हमेशा भय लगता है कि, 'मृत्यु के बाद मेरा क्या होगा?' लेकिन आत्मा को कभी भय नहीं लगता क्योंकि आत्मा को अनुभव है कि वह शाश्वत है। अज्ञानता के कारण अहंकार उत्पन्न हुआ है और देह के आधार से अहंकार को लगता है कि यह देह मैं ही हूँ, इसलिए यदि देह मर जाएगा तो मैं भी मर जाऊँगा। लेकिन सचमुच खुद़ मरता नहीं है। यह देह छोड़ देता है और नया जन्म लेता है। इसलिए चिंता मत करो, तुम नहीं मरने वाले हो। मन बताएगा कि 'क्या होगा?' मन, बुद्धि बताएँगे कि 'मृत्यु के बाद ऐसा होगा' तो कहना कि 'तुम मरने वाले हो, मैं नहीं मरने वाला, मैं शुद्धात्मा हूँ।' यानी कि फाइल नबंर-1 के साथ बातचीत करनी चाहिए।

यह सब रवि पढ़ रहा था तब उसे वेबसाइट पर एक किताब मिली "मृत्यु समय, पहले और पश्चात" उसने उस किताब की PDF डाउनलोड की और एक ही साँस में पूरी बुक पढ़ डाली। उसने जो बातें वेबसाइट पर पढ़ी थीं, वे सब बातें और उससे भी बहुत ज्यादा उसने परम पूज्य दादाश्री की वाणी में पढ़ा। रवि को लगा कि मृत्यु जैसे सेन्सिटिव टॉपिक पर जय को मैं खुद़ समझाऊँ वह कठिन काम है। मैं पहले उसे यह बुक दे दूँ तो? रवि ने वोट्सएप पर जय को बुक की लिंक शेयर की।

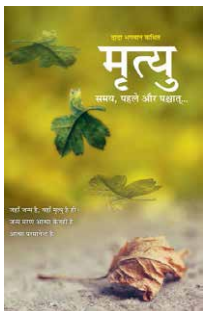

For Free download

Scan Here

दो दिन में ही जय का रिप्लाइ आया।

जय : रवि... तुम्हें यह बुक कहाँ से मिली? दादाजी कौन हैं?

रवि : तुम्हें बुक पसंद आई?

जय : हाँ! मेरे बहुत सारे सवालों के जवाब मिल गए। यह बुक पढ़ने के बाद कल रात को मैं पहली बार शांति से सो सका। थैंक्स रवि! मुझे दादाश्री के बारे में और अधिक जानना है।

और इस तरह जय की निराश जिंदगी में आशा की एक नई किरण जागी। उसके उदास जीवन में एक नई चेतना आ गई।

#कविता

थोड़ा अनजाना सा विषय यानी मृत्यु...
मानव को नापसंद ऐसा विषय यानी मृत्यु...

चित्र-विचित्र धारणाओं से भरा विषय मृत्यु...
लोगों को भयभीत-भ्रमित करता विषय मृत्यु...

राम, कृष्ण या महावीर का भी हिसाब मृत्यु...
मनुष्य को देना ही पड़ता है जो जवाब वह मृत्यु...

मनुष्य को अवश्य स्वीकारना पड़ता है जिसे वह मृत्यु...
ज्ञानी की दृष्टि से समझने योग्य विषय मृत्यु...

दादाजी कहते हैं, सामान्य है यह बात मृत्यु...
दो दिनों के बीच होती है जो रात वह मृत्यु...

बस, पुराने वस्त्र बदलने का विषय मृत्यु...
आगे की यात्रा तय करने का विषय मृत्यु...

देह की तो वीतरागों ने भी रोकी नहीं मृत्यु...
आत्मा ने देखी नहीं और देखेगा भी नहीं मृत्यु...

दादा के युवाओं द्वारा

फरवरी 2022
वर्ष : 9, अंक : 10
अखंड क्रमांक : 106

ज़रूर पढ़े

अप्रैल 2019

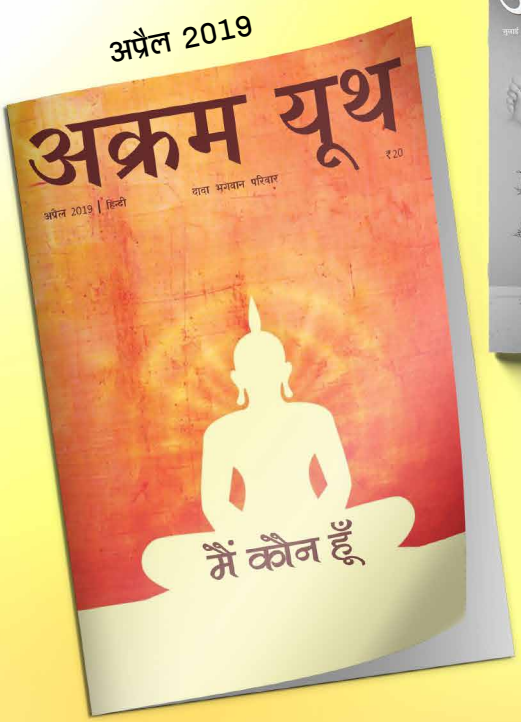

जुलाई 2020

For Free download,
visit www.akramyouth.org

Scan Here

Send your suggestions and feedback at: akramyouth@dadabhagwan.org
Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner.
Printed at : Amba Offset, B-99, GIDC, Sector-25, Gandhinagar – 382025.